सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

तूलिका

वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 2023-24

प्रकाशक

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय, केरल

शाखा : तृशूर

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

तूलिका

वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 2023-24

प्रकाशक

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय, केरल

शाखा : तृशूर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

तूलिका

वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 2023-24

32 वां अंक

पत्रिका परिवार

संपादक मण्डल

मुख्य संरक्षक

श्री एस सुनील राज

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

मुख्य संपादक

श्री राहुल पा

वरिष्ठ उप महालेखाकार (एएमजी I)

सदस्य

श्री जीजो बासट्यन

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती आशा जे आर

हिन्दी अधिकारी

श्री विष्णु एस पी

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

कवर पेज फोटोग्राफी:

श्री जी. सतीश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार है,
सम्पादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

संदेश

भारत एक बहुसांस्कृतिक बहुभाषीय लोकतंत्र है जो इसी बहुस्वरता को राष्ट्रीयता के धागे से पिरोकर एकता का भाव देता है, जो कि अपने आप में एक अद्भुत अजूबा है । यह बाहुल्य भारत की पहचान और एक आशीर्वाद होने के साथ साथ सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के बीच के आदान प्रदान और संचार में अंग्रेजी के प्रयोग को आज तक बरकरार रखने का एक कारण भी है। कार्यलायी सम्प्रेषण एवं व्यापार आदि आर्थिक गतिविधियों में सम्प्रेषण हेतु औपनिवेशिकता से जुड़ी एक भाषा से राष्ट्र को मुक्त करके हिन्दी जो की भारत की अधिकांश जनता द्वरा समझी जाने वाली, विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ संस्कृत से संबंध रखने वाली और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दभंडार को अपनानेवाली एक लोकप्रिय भाषा के उपयोग की अनिवार्यता को समझना बेहद जरूरी है। हिन्दी के प्रचार प्रसार के संवैधानिक दायित्व की तरफ प्रयत्न करने के साथ-साथ, इस दायरे से परे चित्र रचनाओं एवं तस्वीरों का भी स्वागत करना संपादक मण्डल की और से एक प्रशंसनात्मक कार्य है ।

इस लक्ष्य की ओर गतिमान वार्षिक पत्रिका 'तूलिका' के 32 वें अंक का प्रकाशन बेहद गर्व और संतुष्टि प्रदान कर रहा है और पत्रिका के लिए अपने साहित्यिक एवं गैर साहित्यिक योगदान देने वाले सभी कर्मचारियों और परदे के पीछे इसकी सफलता के लिए प्रयत्न करनेवाले सभी राजभाषा संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक अभिनंदन देता हूं।

सुनील

एस सुनील राज
प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा I)

संदेश

हिन्दी का प्रचार प्रसार एक संवैधानिक दायित्व ही नहीं हर भारतीय के लिए राष्ट्रीयता का सवाल है । यह संवैधानिक दायित्व हमें चयन करने का एक मौका देता है कि हमें सैकड़ों सालों की औपनिवेशिकता के प्रतीक को अपने रोजमर्रा के जीवन में जिंदा रखना चाहिए या भारत की संप्रभुता की याद दिलाने वाले एक प्रतीक को उसकी जगह स्थापित करना चाहिए; यह चयन करने का मौका कि एक ऐसी भाषा को सर्वोच्च मानकर जीना चाहिए जिसका व्याकरण और वाक्य रचना का भारत की किसी भी भाषा से कोई संबंध नहीं है या एक ऐसी भाषा को अपनाना चाहिए जो भारत में सबसे अधिक समझी जाने के साथ साथ संस्कृत से पैदा होकर इसी वंशावली से जुड़े भारत की अधिकतर भाषाओं के व्याकरण और वाक्य रचना से मेल खाती हैं । इस चयन की प्रक्रिया में सही दिशा है हिन्दी और इस दिशा की ओर किए जाने वाले प्रयास में इस कार्यालय का सर्वप्रमुख योगदान है "तूलिका"। 'तूलिका' की बत्तीसवें अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

श्री राहुल पा
वरिष्ठ उप महालेखाकार

संपादक मण्डल की ओर से

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (ले प I),केरल, शाखा तृशुर द्वारा प्रकाशित वार्षिक ई पत्रिका 'तूलिका' की बत्तीसवें अंक को पाठकों के समक्ष समर्पित करते हुए अत्यंत खुशी महसूस हो रही है । शुरुआत से ही यह सफर सुंदर रहा है फिर भी हर नए अंक की तैयारी के दौर और प्रकाशन की प्रतीक्षा लेखकों एवं संपादकों के लिए इस सुंदर अनुभूति को वार्षिक रूप से दोहराती रहती है । 'तूलिका' ने हर वर्ष की तरह इस बार भी कार्यालय की कर्मभूमि में व्यस्त कर्मचारियों को कलात्मक रुचियों की अभिव्यक्ति के लिए एक मंच प्रदान करने के साथ साथ उनके परिवार वालों के लिए भी साहित्यिक अभिरुचि या कलाकारिता के प्रदर्शन एवं अभ्यास के लिए एक मंच प्रस्तुत किया है । इस अंक के लिए भी कई प्रतिभाशालियों ने अपने साहित्यिक रुचि के कई मनोज्ञ बिम्ब प्रसत्त किए है । जब श्री सुधीर टी वी, कुम. संजना सुधीर, श्रीमती नेहा जयसवाल, कुमारी अश्वनी अनिल आदि ने जीवन के सुंदर पहलुओं को कविता के आँचल में पोषित करने की प्रयत्न किया तो श्री विष्णु एस पी और श्री मणिकण्ठन ने यही प्रयत्न कहानी के माध्यम से करना चाहा और दो नन्हे कलाकार यकता फातिमा और मोहम्मद यशल एम ने अपनी सुंदर चित्रकला से इस अंक की शोभा बढाई है । श्री दीपक के वी, श्रीमती हसीना पी पी, श्री यासिर, श्री रामचंद्रन एम एस और कुमारी मंजु सी ने अपनी गद्य रचनाओं द्वारा चंद्रयान: भारत के गर्व, सोशल मीडिया, भावनात्मक लगाव, प्रवासी जीवन आदि सामाजिक सांस्कृतिक मुद्दों पर अपने विचार प्रस्तुत किए तो हिन्दी दिवस के संदर्भ में मनाए गए हिन्दी पखवाड़ा समारोह और पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की यादों ने भी विवरणों और चित्रों के रूप में इन पन्नों में अपनी जगह बनाए हैं। आशा करते हैं कि 'तूलिका' के यह अंक भी हमेशा की तरह पाठकों को एक सुंदर अनुभव प्रदान करेंगे। अपने बहुमूल्य विचारों एवं सुझावों से हमें अनुग्रहीत करें ताकि आगामी अंकों को अधिक प्रभावी बनाया जा सके ।

जिजो

जिजो बास्ट्यन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अनुक्रमणिका

01 वह दृश्य जिसने मुझे रामायण में सबसे ज्यादा मोहित किया
वी के मणिकंडन, सहायक पर्यवेक्षक

दोस्ती दुश्मनी 02
सुधीर टी वी, सहायक पर्यवेक्षक

03 जीवन पथ
संजना सुधीर, सुपुत्री सुधीर टी वी, सहायक पर्यवेक्षक

बरखा रानी 04
नेहा जायसवाल, सुपत्नी विष्णु एस पी, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

05 चंद्रयान: भारत का गर्व
दीपक के वी, सहायक निरीक्षक

नारी सशक्तिकरण 06
अनिल इ के, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

07 ख्वाहिशें
अश्वनी अनिल, सपुत्री अनीक इ के, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सोशल मीडिया 08
अनुप्रिया अनिल, सुपुत्री अनिल इ के, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

09 प्लास्टिक का कचरे
हसीना पी पी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

10 मोबाइल से लगाव का बच्चों की पढ़ाई पर प्रभाव
अंबिका दीपक
सुपत्नी दीपक के वी, सहायक पर्यवेक्षक

संगीत और बुद्धिमत्ता का संबंध 11
देविका के दीपक, सुपुत्री दीपक के वी, सहायक पर्यवेक्षक

12 विस्मृति
विष्णु एस पी, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

प्रवासी जीवन की कठिनाइयां 13
यासिर, पति हसीना पी पी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

14 प्रदीप
मंजु सी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

भावनात्मक लगाव आपको कैसे अंधा बना देता है 15
रामचंद्रन एम एस, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

16 हिन्दी दिवस 2023 एवं तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, पुणे

हिन्दी पखवाड़ा रिपोर्ट 2023 17

18 ऑडिट दिवस – 2023 - एक रिपोर्ट

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे । हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे ।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

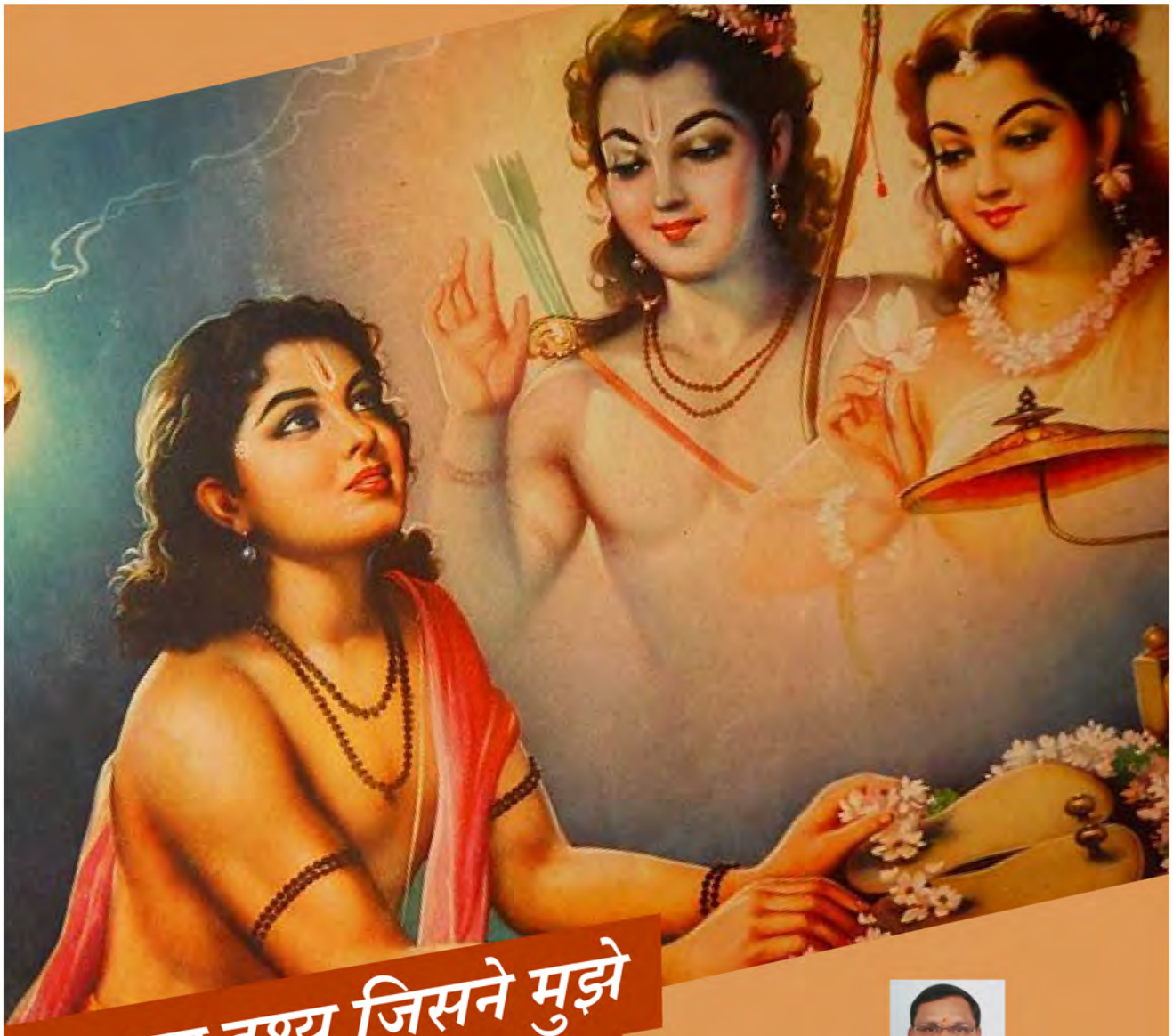

वह दृश्य जिसने मुझे रामायण में सबसे ज्यादा मोहित किया

श्री वी के मणिकण्ठन
सहायक पर्यवेक्षक

राम, लक्ष्मण, विभीषण, हनुमान, सुग्रीव और वानर दल सीता देवी को रावण से बचाकर अयोध्या लौटते हैं। राम ने सीधा भरत के पास जाकर सिंहासन पर कब्जा नहीं किया । भगवान राम अयोध्या के पास स्थित भरद्वाज आश्रम में जाकर विश्राम करने लगे । हनुमान को नंदिग्राम जाकर जांच पड़ताल करने का आदेश दिया और यह भी समझाया कि किन चीजों की जांच करनी है ।

ज्येष्ठ के लौटने की खबर से भरत के चेहरे में आ रहे भाव को समझना । उनके शरीर की भाषा समझना । यह देखना है कि उनके अंदर कुछ नष्ट होने का डर दिख रहा है या नहीं । चेहरे का रंग, उनकी नजर और शब्दों से अंधरूनी विचारों को समझना । इतने लंबे व्यक्त से सदमे है । कुछ तो लत लगी होगी । अगर ऐसा कोई संदेह लगे तो उसी क्षण वापस चले आना हैं। देश का विभाजन किए बिना भरत को ही सत्ता संभालने दो । यह निर्देश दिया था भगवान राम ने ।

हनुमान एक इंसान के रूप में पोशाक पहनकर नंदिग्राम पहुंच गए । वहाँ के दृश्य ने उन्हे हैरान कर दिया । एक सन्यासी के भांति जटाधारी होकर पतले शरीर के साथ भगवान राम के इंतज़ार मे था भरत। राम ने वादा किया था कि 14 साल वनवास पूर्ण होने के अगले दिन वापस आएंगे । भरत निर्णय करके बैठे है कि अगर राम न आए तो वे अग्निसमाधि हो जाएंगे । भरत ने दूर से देखा । भरत ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो धर्म का परम मानव रूप हो । "भरतो विग्रहवान धर्म" विशेषण का रूप लग रहा था भरत ।

इस अवसर को वास्तव में मनाया जाना चाहिए और इसके लिए दो कारण है। यदि वह भी समय के साथ सत्ता के प्रेम में पड़ जाते तो देश के विभाजन तक यह पहुंच जाता । एक ओर देश को अखंड रखने के लिए राम फिर से देश छोड़ने के लिए तैयार हो रहे है और दूसरी ओर जितने भी वर्ष इंतज़ार करना पड़े देश की बागडोर राम को सौंपने के इंतज़ार में भक्तिपूर्वक बैठे हुए भरत का रूप । कितना सुंदर चित्र है !

दोस्ती दुश्मनी

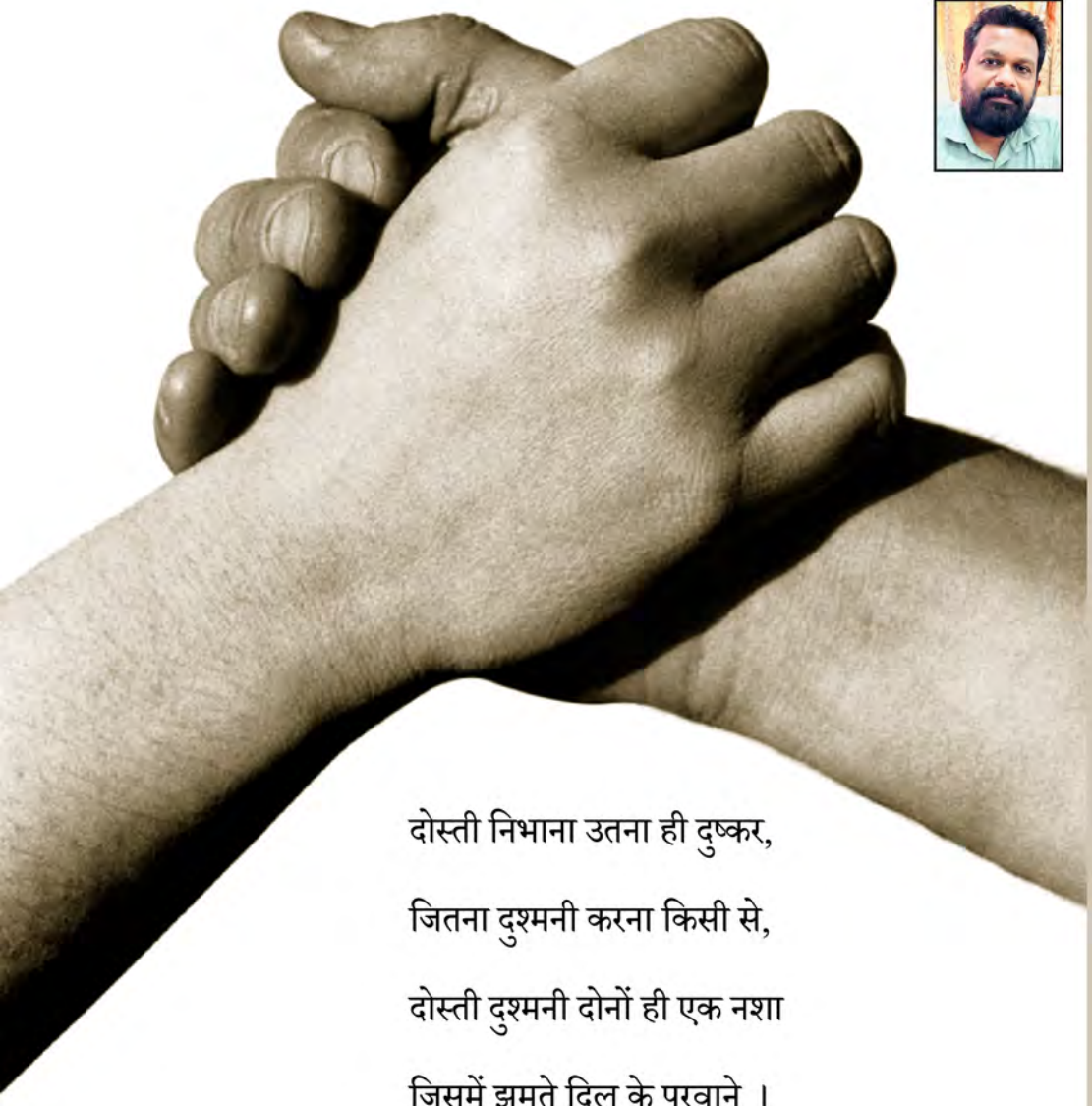

श्री सुधीर टी वी
सहायक पर्यवेक्षक

दोस्ती निभाना उतना ही दुष्कर,

जितना दुश्मनी करना किसी से,

दोस्ती दुश्मनी दोनों ही एक नशा

जिसमें झूमते दिल के परवाने ।

दोस्ती में जान देते, दुश्मनी में जान लेते,

न करते दीदार दिल का, इस लेन-देन के चक्कर में,

दोस्ती के इस दर्पण को

अपने ही दर्प से न तोड़िए ।

सुश्री संजना सुधीर
सुपुत्री सुधीर टी वी
सहायक पर्यवेक्षक

जीवन पथ

डरते है अँधेरों से क्योंकि हमें उजालों से प्यार है,
एक दफा देखिए गौर से अंधेरा में भी करार है,

उलझनों के जाल में होंसले जो दम तोड़ रहें,
उसकी तड़पने में भी सफलताओं के राग हैं,

अब तक की यात्रा के अधूरे,
असफल, टूटे पथ को देखिए,
उनमें भी नव-निर्माण के सार हैं,

हर असंभव में संभाव्यता के आसार हैं,
यही जीवन पथ के आधार हैं,
गौर से देखिए, अंधेरे में करार हैं,
उलझनों में भी आराम हैं ।

बरखा रानी

श्रीमती नेहा जयसवाल
पत्नी विष्णु एस पी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

ओ बरखा रानी
तुम आती हो
सुहाना मौसम लाती हो
तपन मिटाती हो

मन को शीतलता का एहसास कराती हो
पृथ्वी के पीत आवरण को हरित आवरण में बदलती हो
तपन से बदहाल जीवन को ठंठक का बाम लगाती हो
सूखी नदियों, तालाबों, पोखरों को पुनः सजाती हो

ओ बरखा रानी
तुम आती हो
सुहाना मौसम लाती हो
तपन मिटाती हो

जब रूप तुम लेती हो घनघोर और प्रचण्ड हो जाती हो

तब तुम संवारने की जगह संहार करती हो

मानव को उसके छोटेपन का एहसास कराती हो

बिल्कुल एक मां की भांति जो अपने बच्चों को सही राह दिखाती हो

ओ बरखा रानी

तुम आती हो

सुहाना मौसम लाती हो

तपन मिटाती हो

फिर एक दम से तुम शांत हो जाती हो

जैसे संध्या हो जाने पर युद्ध का अंत शंखनाद हो

तुम पृथ्वी पर अपनी हरित ओढनी निशानी के रूप छोड़ जाती हो

पाकर तुम्हारा शीतल स्पर्श मौसम भी शीतल करवट कर जाती हो

ओ बरखा रानी

तुम आती हो

सुहाना मौसम लाती हो

तपन मिटाती हो

चंद्रयान: भारत का गर्व

श्री दीपक के वी
सहायक पर्यवेक्षक

चंद्रयान, भारत का अंतरिक्ष मिशन, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह मिशन चंद्रमा की खोज में भारत के लिए एक नई पृष्ठभूमि बनाने का प्रयास है। चंद्रयान का उद्देश्य चंद्रमा की सतह पर जांच करने और चंद्रमा से संबंधित विभिन्न गवेषणाएं करने का है।

चंद्रयान-1 का पहला अध्याय चंद्रयान-1 के साथ शुरू हुआ था। इस मिशन ने भारत को चंद्रमा की खोज में पहली बार में सफलता प्राप्त करने वाला एशिया का पहला राष्ट्र बना दिया। इस मिशन के द्वारा चंद्रमा की तस्वीरें ली गईं और चंद्रमा की सतह का अध्ययन किया गया।

चंद्रयान-2 भारत के दूसरे चंद्रयान मिशन के रूप में विख्यात है। यह अंतरिक्ष यान सात अलग-अलग वैज्ञानिक प्रयोगों को चंद्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक करने का उद्देश्य रखता है। इसमें विशेष रूप से चंद्रमा के उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र में अटकने वाले विक्रम लैंडर के माध्यम से चंद्रमा की सतह पर उतरने की कोशिश की गई थी। हालांकि, दुर्भाग्यवश, विक्रम लैंडर का संपर्क टूट गया था और यह सफलतापूर्वक उतरने में असफल रहा। लेकिन चंद्रयान-2 मिशन भारत के लिए अपूर्व एवं महत्वपूर्ण अनुसंधान का केंद्र बन गया और इसने वैज्ञानिक समुदाय को एक नया संदर्भ प्रदान किया।

चंद्रयान-3 भारत द्वारा 14 जुलाई 2023 को लॉन्च किया गया। चंद्रयान 3 के सफल होने से भारत को अंतरिक्ष क्षेत्र में नई ऊंचाइयाँ हासिल करने में मदद मिलेगी। यह मिशन चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला भारत का पहला मिशन है। यह मिशन चंद्रमा की सतह पर वैज्ञानिक प्रयोग करने वाला भारत का सबसे उन्नत मिशन है।

चंद्रयान मिशन के माध्यम से भारतीय वैज्ञानिकों ने चंद्रमा के जलवायु, भौतिकी, जैविकता, और उसमें उपस्थित संसाधनों के बारे में बहुमुखी अध्ययन किया। इससे चंद्रमा के रहस्यों को समझने में मदद मिली और वैज्ञानिक समुदाय को और बेहतर विश्लेषण और अध्ययन के लिए नए अवसर प्राप्त हुए। ■

श्री अनिल इ के
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

नारी सशक्तिकरण

आधुनिक भारतीय नारी एक साथ दो भूमिकाएं निभा रही है। वह एक और घर गृहस्थी संभालकर पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर रही है, वही दूसरी ओर नौकरी तथा अन्य व्यवसायों के तनावों से अत्यधिक संघर्षशील हो गई हैं। उसकी इस संघर्ष शक्ति के कारण समाज विकास के मार्ग पर तेजी से अग्रसर हो रहा है।

"खुश होकर दुख पी रही, नारी इस संसार।
उसके कारण ही सुखी रहता हर परिवार।"

पहले नारी का स्थान घर की चार दीवारी तक सीमित था। समाज पुरुष प्रधान था। पुरुष और नारी के कार्यों का स्पष्ट विभाजन था। पुरुष धन कमाता था। नारी पारिवारिक उत्तरदायित्वों का पालन करती थी। वह आर्थिक रूप से पूर्णतया पुरुष पर आश्रित थी। इसीलिए उसे पुरुष के समान नहीं समझा जाता था। उसे 'भोग्या' की संज्ञा दी गई थी।

उसके चारों ओर मर्यादाओं का चक्रव्यूव रच दिया जाता था। त्याग की मूर्ति कहकर विशेष रूप से अत्याचार करते थे। उन्हें लूट का माल समझकर बांटा जाता था। इसी कारणवश नारी को परदे में रखने की प्रथा का प्रचलन हुआ। वैदिक युग में यह स्थिति नहीं थी। तब नारी को पुरुष से बढ़कर सम्मान मिलता था। नारी की शिक्षा पर बल दिया जाता था।

"नारी का हर तरह से, जब होता उत्थान।
सभी तरह से देश का, तब बढ़ता है मान।"

आधुनिक भारतीय नारी ने जहां अपनी विजय पताकाएं एवरेस्ट की चोटियों तक फहरा दी हैं वहीं दूसरी ओर उसकी सामाजिक स्थिति दयनीय भी है। आज भी पुरुष प्रधान मानसिकता के समाज में बेटी का जन्म होने पर अभिशाप माना जाता है। गर्भस्थ शिशु के लिंग का पता कर लिया जाता है। लड़कियों की भ्रूण हत्या करने में आज का तथाकथित सभ्य समाज नहीं चूकता। नारी का सभी प्रकार से शोषण किया जाता है। नन्ही बालिकाओं से लेकर वृद्ध नारियों तक बलात्कार का शिकार बनती हैं। दहेज के कारण नवविवाहिताओं पर दिन-प्रतिदिन अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं और यहां तक कि हत्या तक कर दी जाती हैं। नारी जननी हैं। वह मातारूपी नारी की कोख से जन्म लेने वाला पुरुष ही उस पर अत्याचार करता है । उसकी एसी स्थिति से विवश होकर कवि कहता है ।

"नारी पर संसार में, क्यों हो अत्याचार ।
जिसको वह पैदा करें, उससे खाती हार।
खुद खाना खाती नहीं, नर को रही परोस
दुख सारा वह सह रही रहकर खामोश।"

आधुनिक भारतीय नारी संघर्ष करके समाज में अपनी स्थिति दृढ़ करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है । समाज एकाएक नहीं बदलता । पुरुष और नारी समाज के दो सर्वांगीण विकास स्तम्भ है। नारी की उपेक्षा से ही समाज प्रगती पथ पर अग्रसर होगा, ऐसा सोचना मूर्खतापूर्ण हैं । नारी के सशक्तिकरण से पूरे समाज का सशक्तिकरण होगा।

"मानवता का रूप है, नारी गुण की गान।
नारी इस संसार में, ईश्वर का वरदान।" ■

ख्वाहिशें

सुश्री अश्वनी अनिल
सपुत्री अनिल इ के
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ख्वाहिशें नहीं मुझे
मशहूर होने की,
आप मुझे पहचानते हो
बस इतना ही काफी है।

अच्छे ने अच्छा,
और बुरे ने बुरा जाना मुझे,
क्योंकि जिसको जितनी जरूरत थी
उसने उतना ही पहचाना मुझे ॥

ज़िंदगी की फलसफा भी
कितनी अजीब है
शामें कटती नहीं,
और साल गुज़रते चले जा रहे हैं ॥

एक अजीब-सी
दौड़ है ये ज़िंदगी
जीत हो तो कई
अपने पीछे छूट जाते हैं।

और हार हो तो
अपने ही पीछे छोड़ जाते हैं,
बैठ जाता हूं,
मिट्टी पर अक्सर
ख्वाहिशों से मुक्त
दर्शनों से ग्रस्त।

सुश्री अनुप्रिया अनिल
सुपुत्री अनिल इ के
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया मूल रूप से कंप्यूटर या किसी भी मानव संचार या जानकारी के आदान-प्रदान करने से संबंधित है, जो कंप्यूटर, टैबलेट या मोबाईल के माध्यम से प्राप्त की जाती है । ऐसी कई वेबसाइट्स और एप्प्स भी हैं जो इसे संभव बनाते हैं । सोशल मीडिया अभिव्यक्ति की अनंत अवसरों को पाना संभव बनाता हैं। सोशल मीडिया आपको विचारों, सामग्री, सूचना और समाचार इत्यादि को बहुत तेजी से एक दूसरे से साझा करने में सक्षम बनाता हैं । पिछले कुछ वर्षों से सोशल मीडिया के उपयोग में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि हुई हैं तथा इसने दुनिया भर के लाखों उपयोगकर्ताओं को एक साथ जोड़ा हैं।

सोशल मीडिया और युवा पीढ़ी

सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव युवाओं के मध्य सबसे अधिक देखने को मिलता है । युवा अब शारीरिक खेलों और मनोरंजन के बजाय विडियो गेम आदि का प्रयोग अधिक करते है, जिससे युवा वर्ग शारीरिक और मानसिक तौर पर कमजोर हो रहा है ।

सोशल मीडिया मित्र भी और शत्रु भी

सोशल मीडिया के द्वारा हम जितनी सहजता से सकारात्मक सूचना प्राप्त कर सकते हैं, उतनी ही सहजता से नकारात्मक सूचना भी हमें प्राप्त हो जाती है । सूचना के इस युग में समाज का वो हिस्सा जिस तक नकारात्मक सूचना पहुँच रही है वह तेजी से पतन की ओर जा रहा है ।

सोशल मीडिया के उदाहरण और प्रयोग

सोशल मीडिया का सबसे ज्यादा उपयोग सर्च इंजन, ओडियो, विडिओ, सूचना, फोटो आदि के लिए गूगल, फेस्बूक, ट्विटर आदि के माध्यम से किया जाता है । आज सोशल मीडिया के माध्यम से ही मार्केटिंग प्रचार और क्रय-विक्रय हो रहा है । आज हमें डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता है ताकि हम सही तरीके से सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर सकें ।

प्लास्टिक का कचरे

श्रीमती हसीना पी पी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्लास्टिक एक विशेष प्रकार का पॉलीमर है, जो हमारे दैनिक जीवन में व्यापक रूप से उपयोग होता है । यह सामग्री हमें उत्तेजित करती है और उपयोगकर्ताओं को अनेक सुविधाएं प्रदान करती है । हालांकि, प्लास्टिक के अपवित्र कचरे का प्रकोप बढ़ रहा है और यह एक गंभीर पर्यावरण समस्या बन गया है ।

प्लास्टिक कचरे का प्रकोप पर्यावरण के लिए विशेष खतरा पैदा करता है । इसके नुकसानकारी प्रभावों में शामिल हैं भूमि और जल का प्रदूषण, वन्य जीवन के साथ संकट, जलवायु परिवर्तन और स्वच्छता की समस्याएं । प्लास्टिक कचरे के छोटे छोटे टुकड़े जल, नदी, झील, तालाब और समुद्र जैसे जलस्रोतों में पहुंचकर समुद्री जीवन के लिए खतरा पैदा करते हैं ।

इस समस्या का समाधान करने के लिए, हमें प्लास्टिक के उपयोग में जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है। लोगों को बारकोड से प्लास्टिक के प्रकार की पहचान करने और उसका उपयोग कम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए । स्कूलों और कॉलेजों में छात्रों को प्लास्टिक के नकारात्मक प्रभावों के बारे में शिक्षित करना चाहिए ।

उच्चतम स्तर पर, सरकारों को नए और पर्यावरण के साथ मिलने वाले अनुकूल प्रदूत के विकास को प्रोत्साहित करने की जरूरत है । जल्द से जल्द प्लास्टिक के प्रयोग को घटाने और प्रदूत को दूर करने के लिए नए प्रौद्योगिकियों और विकल्पों को विकसित करने का प्रयास किया जाना चाहिए ।

सारांशतः, हमें प्लास्टिक के कचरे के प्रति जागरूकता बढ़ाने और उसके उपयोग को कम करने के लिए सक्रिय रूप से काम करने की आवश्यकता है । यह समस्या न केवल पर्यावरण के लिए बल्कि हमारे स्वास्थ्य और भविष्य के लिए भी एक बड़ी चुनौती है । हम सभी को इसमें एकजुट होकर इसका समाधान करने की जिम्मेदारी उठानी चाहिए ।

मोबाइल से लगाव का बच्चों की पढ़ाई पर प्रभाव

श्रीमती अंबिका दीपक
पत्नी दीपक के वी
सहायक पर्यवेक्षक

आज की युवा पीढ़ी मोबाइल फोन और दूसरे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के इस युग में पल रही है। इस तकनीकी युग में बच्चों के पास भी मोबाइल फोन का इस्तेमाल बढ़ता ही जा रहा है। यह बच्चों की शिक्षा पर बुरा असर डाल रहा है। खासतौर से बड़े शहरों में बसने वाले बच्चे इन मोबाइल उपकरणों में व्यस्त रहते हैं और इस वजह से उनकी पढ़ाई पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

मोबाइल फोन के सुविधाजनक फंक्शन जैसे कि इंटरनेट, सोशल मीडिया, गेम्स, यूट्यूब वीडियो आदि बच्चों को उसकी ओर खींच लेते हैं। इन सभी विकल्पों से बच्चों का आकर्षित होना स्वाभाविक है । जब वे इसे बिना नियंत्रण के इस्तेमाल करते हैं, तो यह उनकी पढ़ाई को प्रभावित करता है। वे अपने अध्ययन समय में मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं और इससे उनका ध्यान विचलित हो जाता है, जिससे पढ़ाई में कमी आती है।

एक और बड़ी समस्या है सोशल मीडिया के उपयोग का। बच्चे इसमें इतने लिप्त हो जाते हैं कि उन्हें समय की कमी महसूस होती है और वे अपने दोस्तों से जुड़े रहने के लिए रात भर जागते रहते हैं। इससे उनके सोने का समय कम हो जाता है, जिससे उनकी उचित रात्रि निद्रा पूरी नहीं हो पाती है और वे अगले दिन उबाऊ और थका हुआ महसूस करते हैं, जिससे उनकी पढ़ाई पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

इसके अतिरिक्त, मोबाइल फोन के गेम्स भी बच्चों के लिए प्रलोभनशील होते हैं। वे इन गेम्स में समय बर्बाद करते हैं और पढ़ाई के बजाय इन्हें खेलते रहते हैं। इससे उनमें एकाग्रता विकसित नहीं होती है और पढ़ाई में समस्या आती है।

इस समस्या का समाधान करने के लिए, अभिभावकों को अपने बच्चों के मोबाइल फोन के उपयोग पर नजर रखनी चाहिए। वे समय-समय पर बच्चों के मोबाइल फोन उपयोग करने की सीमा तय कर सकते हैं ।

संगीत और बुद्धिमत्ता का संबंध

सुश्री देविका के दीपक
सुपुत्री दीपक के वी
सहायक पर्यवेक्षक

बुद्धिमान और सक्रिय मनुष्य का मूल मंत्र रहा है - 'स्वस्थ मन स्वस्थ शरीर' । इसका अर्थ है कि एक स्वस्थ मन वाला व्यक्ति शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों में स्वस्थ होता है । और इस संबंध में संगीत का भी एक महत्वपूर्ण योगदान है । संगीत एक ऐसी कला है जो हमारे दिमाग को सक्रिय रखने का काम करती है और हमारी बुद्धिमत्ता को सुधारती है । यहां इस लेख में हम संगीत के बुद्धिमत्ता में योगदान को गहराई से जानेंगे ।

संगीत का मानसिक फायदा है कि यह हमारे स्वास्थ,मनोवृत्ति और भावुकता में सुधार करता है । संगीत सुनने या बजाने से हमारे मस्तिष्क में एक पॉजिटिव एनर्जी उत्पन्न होती है, जो हमें तनाव, दबाव और चिंता से दूर रखने में मदद करती है । संगीत की ध्वनियों का असर हमारे दिमाग के विभिन्न क्षेत्रों पर होता है, जिससे यह हमारी मानसिक शक्ति को प्रोत्साहित करता है और हमारी सोचने की क्षमता को बढ़ाता है ।

विज्ञान ने भी साबित किया है कि संगीत बुद्धिमत्ता को बढ़ाने में मदद करता है । ध्यान से सुना जाने वाला संगीत, जैसे कि क्लासिकल संगीत, दिमाग के कार्यक्षेत्रों को सक्रिय करती है । इसके अलावा, संगीत का सीधा असर हमारे भाषाई कौशल पर भी पड़ता है । संगीत सीखने और गाने से हमारे व्याकरण, शब्दावली और भाषा समझने की क्षमता में सुधार होता है ।

बच्चों के विकास में संगीत का महत्वपूर्ण योगदान होता है । बच्चों को संगीत सिखाने और सुनने से उनकी सृजनात्मकता, विचारशक्ति, और समस्या समाधान की क्षमता में सुधार होता है । संगीत के साथ-साथ अभिनय, नृत्य और संगीत विद्यालयों में शिक्षा लेने से बच्चे सहजता से विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति कर सकते हैं ।

श्री विष्णु एस पी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

विस्मृति

ट्रेन की खिड़की पर गिरती उछलती कुछ बूंदों ने पलकों को छूकर जागने पर मजबूर कर दिया। जोर से बारिश हो रही थी । दूर से जैसे प्रतीत होने वाली ट्रेन की आवाज़ और उसमें मिलकर कान को मिठास प्रदान करने वाली बारिश और गांव की आवाज़ें पीछे छूटने लग गई थे। नींद की ओर फिसलते बचते फिसलते बचते वापस फिसलने ही वाला था कि एक हाथ कंधे को छूकर हिलाने लगा। गिरते पड़ते पलट कर नींद से अर्थहीन की गई नज़रों से उस चेहरे की ओर भावनाहीन तरीके से देखा। एक आदमी, चश्मा पहने हुए, कुछ पच्चीस वर्ष का होगा। चश्मे के पीछे झलकने वाली उन आँखों में कुछ अलग ही खुशी दिख रही थी। एक मुस्कान ऐसी जिसमें से बहती भावनाओं में एक बूंद भी कपट नहीं दिख रहा था। अस्त-व्यस्त नजरें फेरते हुए मुझे देखकर उसने पूछा, "पहचाना नहीं?"

नींद के पंजों से छुटकारा पाने की कोशिश में जीतते जीतते, विस्मृति के किनारे पर खड़े पुराने चेहरों के बीच झांकते हुए मैने कहा "याद नहीं आ रहा।"

भावनाए छिपाना उस चेहरे के लिए संभव नहीं था। व्यर्थ कोशिशों के बीच चेहरे पर छिपते उभरते भावनाओं को वह देख पा रहे थे। मायूस होकर भी हंसी का मुखौटा पहनकर बोला.. "अरे भाई !! याद करो.. इतना भी पुराना चेहरा नहीं है।" अपने भूतकाल के पन्नों में खोए और दफनाए हुए चेहरों की यादों में पूरे दिल से खोजने के बावजूद असफलता ही पाने पर अपने अध्यापक से माफी मांगने वाले एक छोटे बच्चे की भांति मुंह बनाकर मैंने बोला, "माफ करना दोस्त । याद हमेशा साथ नहीं देती । ऊपर से नींद भी कम मिली है । हम पहले मिले है क्या?" इस सवाल ने शायद उसके अंदर कुछ तोड़ सा दिया । मुस्कुराहट के परदे के पीछे आँखों मे अचानक आई आँसू की एक बूंद वो छिपा न सका ।

एक वजनदार मुस्कुराहट से उस आसू की बूंद को आँखों में ही कैद करके उसने पूछा "ये कैसा अमनेशिया है। ऐसे कैसे भूल सकता है इंसान। आखिरी बार हम मिले तो तुम सिर्फ कुछ पच्चीस के होंगे। अभी तुम्हारी उम्र कितनी है?"

अचरज में पड़े चेहरे को छुपाये बिना मैने कहा "इक्तालीस का हूं अभी ।"

उसकी आँखों से बहने वाली यादों की रफ्तार तेज हो रही थी और मुस्कुराहट उससे भी गहरी। उन यादों की रफ्तार ने अब मेरी यादों की गुप्त अभिव्यक्तियों को भी विस्मृति की जंजीरों को एक के बाद एक तोड़ कर आजाद करने लग गई। चेहरे छलकने लग गए.. शून्यता मे बेजान पड़ी उन यादों को मानो अचानक सांस मिल गया हो। इस चेहरे की, इस मुस्कान का, इन भावनाओं की अप्रत्यक्ष डोरियाँ सामने आने लग गई ।

संदर्भ मिल रहे हैं ।

उस नए संदर्भ में मैने एक घर देखा। वहां इस दोस्त को देखा, जो हमेशा मेरे साथ था, जिसकी याद तब भी चेहरे या नाम से नहीं बल्कि अनुभूतियों की अभिव्यक्त से हो रही थी। उसकी दादी को देखा। उनके खाने का स्वाद देखा। उनकी प्यार भरी पुकार देखी। बाहर गए हुए लोगों के इंतज़ार में बीते उनके अकेले पल को देखा। उनकी आवाज सुनकर नींद से ही पुंछ हिलाने वाले अपने टिनकु को देखा। इनके साथ मैने यह मुस्कुराहट भरा चेहरा देखा। कारण न समझते हुए भी यादों की इस बाढ ने आँखों को भिगो दिया लेकिन तब भी सिर्फ इस अजनबी का नाम याद नहीं आ रहा है । यादों से उभरी भावनाओं में बहते हुए उन्ही यादों के पन्नों में छिपे हुए इस चेहरे को पहचानने का ढोंग करते हुए मैने पूछा , "अरे भाई तुमको मैं कैसे भूल सकता हूं !! दादी कैसी है? और तुम्हारे पप्पी टिनकु का क्या हाल है? कहां रहते हो आजकल?"

उसी मुस्कुराहट के साथ उसने बोला, "आखिर याद आ ही गया। सब अच्छे है। मेरे साथ ही है। बस तुम गायब हुए थे। साथ में कितना अच्छा था। क्यूं जाना था। रह नहीं सकते थे? क्यूं जाना था?"

"क्या करूं भाई। पैसे जो कमाने थे। काम के बिना गुजारा कैसे होता। और गांव में तो कोई काम था नहीं। गांव तो छोड़ो, पूरे जिले में काम करने नहीं दे रहा था यह भ्रष्टाचारी समाज।"

"मैं उसकी बात नहीं कर रहा हूं। काम के लिए तो तुम्हारा शरीर दूर गया था। शरीर से तो तुम पहले ही हमें पार कर चुके हो।"

इस जवाब से मेरा जी घबराने लग गया। "क्या पागलपन है ये?"- मैं ने कहा।

"मतलब तुमने अभी भी मुझे पहचाना नहीं। अस्तित्व के सामयिक और स्थानिक आयामों के एक ही दिशा में बंधी सोच को मुक्त करो और उनसे परे सोचो दोस्त। वक्त ने दीवारें जरूर खड़ी की हैं और दूरियां भी। लेकिन क्या मैं इतना दूर हूं कि तुम्हें याद ही नहीं आ रहा है?"

"क्या तुम दूर हो?" मैने पूछा।

सवाल के जवाब में उसने मुझे तीक्ष्ण नज़रों से देखा मानो मेरे दिमाग की गहराईयों में छिपी यादों के सैकड़ों दर्पणों को उसकी नजर की तलवार ने हजारों टुकड़ों में तोड़कर ऐसे बिखेर दिया हो जैसे हर टुकड़ा एक आईना बनकर मेरे सामने खड़ा हो। वक्त थम-सा गया और आँखों के सामने तैरते उन कांच की टुकड़ों में मैने खुद को देखा, उस दादी को देखा, उनके प्यार देखा, उनके छाव में गुजरा बचपन देखा, उनके बनाए खाने का स्वाद देखा, उनकी मौत देखी, टिनकु को देखा, उसकी दोस्ती देखी, उसके साथ पहला दिन देखा, उसका आखिरी दिन भी देखा, खुद को देखा, इन प्यारे जीवों के साथ खुद को देखा, खुद के चेहरे की खुशी देखी, इनके साथ ही विस्मृति मे डूब रही खुद की उस मुस्कान को देखा। यादों की बौछार से आँखें भरकर बहने लगी और उस बाढ़ के परदे से धुंधली हुई दृष्टि में उस अजनबी की विस्मृति में डूबती सांसों से उभरते हुए खोए हुए खुद को देखा । चंद बरसों में बदली ज़िंदगी की रफ्तार देखी। उन यादों में मासूमियत देखी, धूप देखी, बारिश देखी और सुनी, "यात्री कृपया ध्यान दें। नई दिल्ली से तिरुवनंतपुरम जाने वाला ट्रेन नंबर 12626 केरला एक्स्प्रेस तिरुवनंतपुरम सेंट्रल प्लेटफॉर्म नंबर 1 पर खड़ी है।" आँख खोली तो न वो था न यादें .. सिर्फ मैं ।

प्रवासी जीवन की कठिनाइयां

श्री यासिर
पति हसीना पी पी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रवासी जीवन वह जीवन है जिसमें व्यक्ति अपने निवास स्थान से दूर रहकर किसी अन्य स्थान में अपना जीवन बिताता है । हमारे सामने ऐसे बहुत लोग हैं जो अपने अधिकारों से वंचित हैं खासकर प्रवासी लोग । प्रवास अपने सामान्य अर्थ से बढ़कर एक मानसिक भाव का द्योतक भी है । प्रवासी के मन में हमेशा अपनी मिट्टी की गंध भरी होती है । विदेश में रहने पर भी वह स्वदेश की स्मृतियों में जीने के लिए विवश होता है । इस तरह का जीवन आमतौर पर अनुभवशील और ज्ञानवर्धक होता है, लेकिन इसके साथ ही कई कठिनाईयाँ भी जुड़ी होती हैं । काम की खोज में विदेश पहूँचने वाले लोगों का बाद में प्रवासी बनने का दृश्य हमारे चारों ओर है ।

जीवन की व्याख्या हम कई तरह से कर सकते हैं । हर एक व्याख्या का अपना-अपना कारण भी हो सकता है । दूसरे देशों में काम करके अपनी ज़िन्दगी वहीं मुरझाने की नियति भोगनेवाले भी हमारे सामने हैं । वास्तव में दुनिया की कई जगहों के निर्माण और पुनर्निर्माण में इन लोगों का हाथ हैं जिन्हें हम प्रवासी कहते हैं । अपने रक्त को पसीना बनाकर ये प्रवासी मज़दूर अपनी जन्मभूमि से दूर रहकर, बुनियादी आवश्यकताएँ भी छोड़कर, मानव के सामान्य अधिकारों से भी वंचित होकर पराये देश के विकास कर्म में रत हैं । इस तरह उन का अस्तित्व न विदेश का होता है न स्वदेश का । अपने अधिकारों को पाने और बनाये रखने के लिए उन्हें संघर्ष करना पड़ता है । प्रवासियों के अस्तित्व की समस्या केवल उनकी नहीं है, सारे समाज की है।

स्वदेश का । अपने अधिकारों को पाने और बनाये रखने के लिए उन्हें संघर्ष करना पड़ता है । प्रवासियों के अस्तित्व की समस्या केवल उनकी नहीं है, सारे समाज की है ।

जो अपने देश के वासस्थान को छोड़ते हैं उन के मन में हमेशा अपने खोए हुए देश की संस्कृति सोती रहती है । उनके आचार, धर्म, भाषा, लोककथा आदि में लगन और वैचारिकता के अंश अंतर्लीन रहते हैं । पहली कठिनाई प्रवासी जीवन में भाषा की होती है । अगर व्यक्ति अपने नए निवास स्थान में स्थायी रूप से नहीं रहता है, तो उसकी मातृभाषा का प्रयोग नहीं हो पाता है । इससे न केवल संवाद में कठिनाई होती है, बल्कि दिनचर्या के कई पहलुओं में भी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं ।

एक प्रवासी मज़दूर हमेशा तनाव में रहता है। उस देश के कानून प्रवासियों के अनुकूल होने की संभावनाएँ बहुत कम हैं। जन्मभूमि छोड़ जाने से वे प्रवासी बन जाते हैं, लेकिन विदेशों में वे पराये देश के हैं। दूसरी कठिनाई प्रवासी जीवन में सामाजिक संबंधों की होती है। नए स्थान में लोगों के साथ मिलनसार होना और समझ-बूझ से संबंध बनाए रखना मुश्किल हो सकता है। अक्सर लोग अपने आदिकालिक समृद्धि से दूर रहकर अकेलेपन का सामना करते हैं।

तीसरी कठिनाई है स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा की उपलब्धता में कमी। कई बार प्रवासी अपने नए स्थान में उच्चतम शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में पड़ सकता है, जिससे उसके और उसके परिवार के लिए जीवन मुश्किल हो जाता है।

सुश्री मंजु सी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रदीप

हर सुबह उजले दीपक की तरह होनी चाहिए। लोग सुबह अपनी आँखें सुख और शांति के लिए ही खोलते हैं। इसके लिए सुबह के समय नया ज्ञान प्राप्त करने(सीखने) का प्रयास करना एक अच्छी मानसिकता है । जीवन की कठिनाइयों को दूर करने और खुशी प्राप्त करने का ज्ञान अध्ययन के माध्यम से प्राप्त किया जाता है । हाल ही में योगाभ्यास मानव जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। नृत्य और संगीत भी एक प्रकार का योग ही है ।

ऐसा कहा जाता है की सुबह का संगीत जीवन का लय निर्धारित करता है; बाँसुरी की ध्वनि के साथ जागें तो ऐसा लगता है कि वह इंद्रियों को उत्तेजित करती है और शांति की अनुभूति प्रदान करती है।

उदाहरण के लिए, कथक एक सरल और सुंदर नृत्य है जो हिन्दुस्तानी संगीत की पृष्ठभूमि में तबला, पखवाज, सित्तार, बांसुरी और सारंगी/ हारमोनियम के संगम से उभरती है । यह पूरे उत्तर भारत जैसे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान आदि से संबंधित है । स्वतंत्र रचनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं जो हिन्दी और इसकी विभिन्न क्षेत्रीय बोलियाँ जैसे ब्रजभाषा, भोजपुरी आदि में होती हैं। पहले के समय में कलाकारों को भी कथक कहा जाता था; इस शब्द का अर्थ दो चीजों से था - अभिनेता और अभिनय। वर्तमान समय में यह प्रचलन नजर में नहीं आता।

ऐसा प्रतीत होता है कि कथक सदियों से अस्तित्व में है। प्राचीन काल में यह मंदिर की स्थापना का हिस्सा था और ब्राह्मण पुरुषों द्वारा किया जाता था। समय के साथ कथक में बहुत सारे बदलाव देखे गए -- धीरे धीरे गैर- धार्मिक व्यवस्था में अनुकूलन, मंदिरों के बाहर प्रदर्शन, महिला नर्तकियों का दृश्य में प्रवेश, इत्यादि। कथक के इतिहास में ध्यान देने योग्य एक दिलचस्प बात यह है कि जिन हिस्सों में यह लोकप्रिय था, वहां मुगल शासकों का आगमन हुआ। सम्राट अकबर जैसे लोगों ने इस प्रथा को संरक्षण दिया और इस प्रकार यह उनके दरबारों में अच्छी तरह फली-फूली। इस अवधि के दौरान जो प्रमुख अनुकूलन आया वह था शुद्ध नृत्य की ओर धीरे-धीरे बदलाव । पारंपरिक मंदिर व्यवस्था के बाहर, इस शैली को कलात्मक निपुणता के साधन के रूप में सामने आना था। इसलिए, उस समय के तेज़ गति वाले नृत्य को फीचर बनाया गया, जिससे कथक एक मनोरंजक और रोमांचक अनुभव बन गया।

सभी भारतीय नृत्य शैलियों की तरह 'नृत्त-अभिनय' कथक नृत्य की प्रदर्शन तकनीक के तत्व हैं।

शुद्ध नृत्य:- कथक, अभिनय की बजाय नृत्य (शुद्ध नृत्य) पर जोर देता है। कथक शुद्ध नृत्य क्रम को 'तत्कार' कहा जाता है। एक छात्र को बहुत तेज गति से 'तत्कार' करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

चक्कर (तेज गति से घूमना):- 'चक्कर' कथक का अभिन्न अंग है और अद्भुत प्रदर्शनों में से एक है। नवोदित कलाकार भी बिना रुके 50 चक्करों का प्रदर्शन करते हैं। इसके अलावा, नर्तक एक और आकर्षक क्रम भी प्रस्तुत करता है जिसे 'पडहन्त' कहा जाता है।

कथक में लयबद्ध शब्दांश को 'बोल' कहा जाता है। यह सीधे तौर पर पढ़ंत से संबंधित है और कथक के लिए अद्वितीय है।

अभिनय (विचारों का संचार) :- कथक मूलतः एकल शैली है हालाँकि इसमें समूह प्रस्तुति भी देखने को मिलती है। एकल प्रस्तुती में, कलाकार तीन भूमिकाएँ निभाते हैं -- कथावाचक, पात्र और स्वयं कलाकार। प्रदर्शन के कुछ हिस्सों में वह स्वयं ही होते हैं; यह कथक की बहुत बड़ी विशेषता है और अन्य शैलियों में देखने को नहीं मिलती।

एकल कथक प्रस्तुति में एक कहानी का प्रदर्शन करते समय, 'चरित्र में बदलाव' को कलाकार द्वारा चारों और चक्कर लगाने और

मंच पर किसी अन्य चरित्र को दर्शाने के लिए किसी अन्य स्थान पर कब्जा करने से दर्शाया जाता है । इसे 'पलटा' कहा जाता है। हमारी सभी नृत्य परंपराओं में आख्यानों की प्रस्तुति लोकप्रिय है। कथाओं की ऐसी प्रस्तुति को कथक में 'गत भाव ' कहा जाता है। अन्य शैलियों की तुलना में 'कथक' में मुद्राएँ अधिक प्रतिबंधित और सीमित हैं। कथक और कथकली की तुलना में, कथकली में मुद्राओं(हाथ के इशारों) पर अत्यधिक जोर दिया गया है जिनका उपयोग विभिन्न प्रकार के विचारों को व्यक्त करने के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है। लेकिन कथक में, हाथों को पूरे शरीर का हिस्सा माना जाता है और प्रवाह को समग्र शारीरिक भाषा का हिस्सा माना जाता है।

अन्य शैलियों की तरह कथक में भी नायिका - नायक के भाव महत्वपूर्ण है। कृष्ण एक मुख्य पात्र हैं और कई प्रस्तुतियाँ राधा-कृष्ण विषयों पर केंद्रित है । इसके लिए प्रस्तुत रचनाओं को 'ठुमरी' कहा जाता है।

मंच पर एक कथक नर्तकी अपनी बिना झंझट वाली सरल पोशाक में (बहुत कम आभूषण और बालों की साधारण सजावट कथक की योजना है), एक सुंदर मुद्रा में खड़ी होती है और अपना 'तत्कार' शुरू करती है; कुछ ही समय में उसके पैर वस्तुतः चौथी गति में उड़ते हैं, उसके पैरों पर तीन सौ घुंघरू (पहनने की एक विधि होती है जिसे बस एक डोरी से बांधा जाता है। इसलिए अभ्यास की शुरुआत में पैरों पर काफी भारी लगती हैं); पैरों के पास रखे माइक(कथक में पूरे प्रदर्शन के दौरान मंच पर एक खड़ा माइक रहता है) से एक स्वर में खनकना, जिससे प्रभाव बढ़ जाता है। तबला वादक की दौड़ती ऊँगलियाँ उसके स्ट्रोक्स से मेल खाती हैं; और कुछ ही समय में, दर्शक मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। इस लयबद्ध 'झरने' के दौरान, उसका चेहरा सुखद और अविचलित होता है और हाथ सुव्यवस्थित तरल शैली में होते हैं। लेकिन उसके पैरों को देखने का प्रयास करें: आप सोचेंगे कि वे जमीन से कुछ इंच ऊपर है, ऐसी है गति!

आज जब हम कथक को देखते हैं, तो इसमें दोनों पहलु बरकरार हैं -- लयबद्ध प्रतिभा और पारंपरिक विषय। टुकड़ा, गत निकास, कवित्त, घराना, ध्रुपद, तराना, आमद, लहरा, जुगलबंदी जैसे शब्दों के अर्थ जानने से कथक और भी आकर्षक हो जाता है। यह सच है कि दक्षिण में कथक, ओडिसी, मणिपुरी, सत्रिया आदि देखने के अवसर काफी काम हैं । लेकिन, आज सुबह कथक की यह विनम्र, छोटी-सी लहर हर किसी के लिए है।

भावनात्मक लगाव आपको कैसे अंधा बना देता है

श्री रामचंद्रन एम एस
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

"यदि आप भावनात्मक रूप से अपनी जाति, धर्म या राजनैतिक झुकाव से इस हद तक जुड़े हुए हैं कि सत्य और न्याय गौण विचार बन जाते हैं, तो आपकी शिक्षा बेकार है। आपका प्रदर्शन बेकार है। यदि आप क्षुद्र भावनाओं से परे तर्क नहीं कर सकते हैं, तो आप मानव जाति के लिए एक दायित्व है।"

डॉ चीबा ऑकड़िगबो(दिवंगत) (नैजीरियाई राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, अकादमिक, लेखक और राजनैतिक वैज्ञानिक। उन्होंने नाइजीरिया के 8 वें राष्ट्रपती के रूप में कार्य किया)।

यह सत्य है कि प्राचीन काल से ही धर्म और राजनीति मानव हित के दो महत्वपूर्ण क्षेत्र रहे हैं। लोगों का मानना है कि राजनीति समाज में बदलाव ला सकती हैं। धर्म और ईश्वर की खोज धार्मिक विचारधारा वाले लोगों को शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करती है। क्या हमारी प्राथमिकताएं धर्म और राजनीति है? यदि नहीं तो हम अक्सर अतार्किक धार्मिक शिक्षाओं के प्रति अंधे क्यों हो जाते हैं? बड़े पैमाने पर लोगों के हित में राजनीतिक दलों के रुख पर अक्सर सवाल नहीं उठाया जाता है, बल्कि आँख मूंदकर उसका पालन किया जाता है। ऐसा भावनात्मक लगाव के कारण होता है जो किसी व्यक्ति की इन क्षेत्रों में रुचि से हो सकता है। जब हम इन चीजों या विचारों से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं, तो हम चीजों को स्वतंत्र रूप से समझने की क्षमता खो देते हैं।

आइए हम उसका अनुसरण करें जो सार्थक है न कि वह जो समीचीन है। जब मन अंधा हो तो आँखें बेकार हैं । हमें अपने दिमाग और आँखों को अंधा नहीं होने देना चाहिए।

हिन्दी दिवस 2023 एवं तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, पूणे

भारतीयों के लिए हिंदी एक भाषा नहीं बल्कि एक भावना है। 14 सितंबर इसी भावना को मनाने के लिए समर्पित दिन है। भारतीय इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं, क्योंकि यह संघ सरकार की राजभाषा है और संविधान हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाने की याद दिलाता है।

हिंदी दिवस के अवसर पर हमें राजभाषा का सम्मान करने और इसके आगामी प्रयोग के लिए आवश्यक कदम उठाने की शपथ लेनी चाहिए। हिंदी दिवस का उत्सव भाषाई और सांस्कृतिक बहुलवाद के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

हिन्दी दिवस 2023 और तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 13 और 14 सितंबर को भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग द्वारा पुणे, महाराष्ट्र के बलेवादी में स्थित शिव छत्रपती स्पोर्ट्स कॉमप्लेक्स में आयोजित किया गया। पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन नवंबर 2021 में वाराणसी में आयोजित हुआ था तो दूसरा सम्मेलन गुजरात के सूरत में आयोजित हुआ था और दोनों ही सम्मेलनों में हजारों प्रतिभागियों की भीड़ के होते हुए अत्यंत सफल रहा। और इन दोनों सम्मेलनों की भांति 2023 के सम्मेलन में भी हिन्दी से प्यार करने वाले हजारों लोगों ने भाग लिया। बैंकिंग, शिक्षा आदि की क्षेत्रों से लेकर केंद्र सरकार के अधीन मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों आदि से हिन्दी अधिकारी, अनुवादक या हिन्दी से जुड़े कार्य सम्पन्न करने वाले हजारों कर्मचारियों और भाषा विद्वानों ने इस सम्मेलन की शोभा बढाई।

हिन्दी के विकास और प्रचलन से संबंधित कई सारे क्रियात्मक चर्चाओं के लिए यह एक उत्तम मंच साबित हुआ। हिन्दी के विकास में मीडिया और अन्य भारतीय भाषाओं की भूमिका से लेकर हिन्दी के परिप्रेक्ष्य में रोजगार, भारतीय सिनेमा आदि कई पहलुओं पर चर्चा हुई और राजभाषा कार्यान्वयन में उल्लेखनीय योगदान देने वालों को "राजभाषा गौरव" और "राजभाषा कीर्ति" पुरस्कार दिए गए। भारत के नियंत्रक एवं महालेखाकार के कार्यालय के प्रतिनिधि के रूप में सम्मेलन में उपस्थित महानिदेशक(राजभाषा) को 2022-23 के लिए 300 से अधिक कार्मिक वाले मंत्रालय/विभाग श्रेणी में, राजभाषा नीति के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा के हाथों से सर्वोच्च "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" प्रदान किया गया। सम्मेलन के उद्घाटन के दौरान अनुवाद टूल 'कंठस्थ 2.0' और ई-ऑफीस के इंटीग्रेशन का लोकार्पण भी किया गया।

14 सितंबर 2023 को हुई उद्घाटन सत्र में सभा अध्यक्ष माननीय गृह मंत्रि श्री अमित शाह थे, जिन्होंने अपने विडियो संदेश के माध्यम से सम्मेलन की शोभा बढ़ाई। केन्द्रीय राज्य मंत्री भारती पवार, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष भर्तृहरि महताब, वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रो. गिरीशनाथ झा, राजभाषा विभाग के सचिव अंशुली आर्य, संयुक्त सचिव डॉ मीनाक्षी जौली आदि ने भी अपनी उपस्थिति से समारोह की शोभा बढाई । विश्व स्तर पर हिन्दी के बढ़ते मान पर रोशनी डालते हुए श्री अजय मिश्रा ने हाल हि मे हुई जी-20 सम्मेलन का जिक्र करते हुए कहा कि हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु श्री नरेंद्र मोदी की नीतियों के फलस्वरूप सभी राष्ट्र प्रमुखों ने हिन्दी की प्रशंसा करने के साथ साथ हिन्दी में प्रधानमंत्री का अभिनंदन करने का प्रयत्न भी किया। माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने भी अपने वीडियो संदेश में वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के बढ़ते वर्चस्व को दर्शाते हुए भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में पिरोने के संदर्भ में हिन्दी के महत्व पर जोर दिया।

अखिल भारतीय राजभाषा

मशहूर साहित्यकार हरीश नवाल और हिन्दी अखबार 'आज का आनंद' के संस्थापक श्याम अग्रवाल ने हिन्दी के विकास में साहित्य और मीडिया की भूमिका को समझाने का प्रयत्न किया जिसके दौरान रेडियो, नाटकों और टी वी धारावाहिकों का विशेष जिक्र हुआ। हिन्दी के परिप्रेक्ष्य में रोजगार के बढ़ते अवसर भी चर्चा का विषय बने जिसपर हिन्दी संबंधित रोजगार का एक प्रमुख स्रोत - न्यूज मीडिया - की ओर से जब न्यूज 24 चैनल की पत्रकार रुबिका लियाकत ने अपने विचार व्यक्त किए तो सरकारी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए मध्यप्रदेश के रवि कुमार सिहग, आई ए एस, राजस्थान से निशांत जैन, आई ए एस और उत्तरप्रदेश सत्यार्ध अनिरुद्ध पंकज ने भी अपने बहुमूल्य विचार रखे।

सम्मेलन के दूसरे दिन 15 सितंबर के कार्यक्रम 4 सत्रों में बाँटे गए थे जिसके दौरान हिन्दी भाषा के विविध गुणों एवं भाषा कार्यान्वयन से संबंधित पहलुओं पर भाषण हुए। इसमें पहला था अन्य भारतीय भाषाओं से हिन्दी के अटूट संबंध को दर्शाते हुए "भारतीय भाषाओं से सशक्त होती हिन्दी" विषय पर उत्तरप्रदेश विधान सभा के पुर्वाध्यक्ष श्री हरीनारायण दीक्षित, केन्द्रीय भाषा संस्थान के अध्यक्ष श्री चामू कृष्ण शास्त्री, वरिष्ठ साहित्यकार प्रो सुरेश ऋतुपर्ण और मराठी भाषा विद श्री दामोदर खड़से द्वारा सजाए गई ज्ञान की बारात। दूसरा सत्र नराकास पर केंद्रित था और "नराकास: राजभाषा कार्यान्वयन का प्रभावशाली मंच" विषय पर विविध मान्यवारों ने अपने विचार व्यक्त किए और इसके साथ ही केंद्र सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों को नराकास पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया।

हिन्दी भाषा के विविध गुणों पर जोर देते हुए जब महाराष्ट्र हिन्दी परिषद की उपाध्यक्ष सुश्री प्रियंका शक्ति ठाकुर ने "सर्वसुलभ, सर्वसमावेशी और सर्वव्यापी भाषा- हिन्दी" विषय पर स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक पन्नों को साक्षी बनाकर अपने विचार व्यक्त किए, तो आखिरी सत्र को अतिसुन्दर बनाया विख्यात अभिनेता श्रीमान आशुतोष राणा ने जिनका साक्षात्कार जब वरिष्ठ कवि, गीतकार और टी वी पत्रकार आलोक श्रीवास्तव ने लिया तो पूरी मंच के लिए यह एक अतिसुन्दर अनुभव साबित हुआ।

हिन्दी
पखवाड़ा रिपोर्ट
2023

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2023 शाखा कार्यालय तृशूर में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी स्कंधों के संयुक्त तत्वाधान में मनाया गया।

14 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस के रूप में मनाया गया। हिंदी पखवाड़ा समारोह तथा प्रतियोगिताओं का उद्घाटन भी इसी दिन हुआ। समारोह का शुभारंभ प्रार्थना के साथ हुआ। श्री आकाश मिश्रा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने हिंदी की प्रोत्साहन भरी पंक्तियों के साथ समारोह का संचालन किया। श्रीमती गेळी कृष्णा, हिंदी अधिकारी (ले व ह) ने अपने स्वागत भाषण में राजभाषा हिंदी को गति देने के लिए समस्त कर्मचारी-वृंद को प्रेरित किया।

श्री सी. अच्युतामेनोन सरकारी कॉलेज, कुट्टनेल्लूर में प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष श्रीमती डॉ आशा इस अवसर पर मुख्य अतिथि रहीं। उन्होंने दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ आशा ने कर्मचारियों में राजभाषा जागरूकता पैदा करने के लिए अपने वक्तव्य में ज़ोर दिया तथा हिंदी की महत्ता को बताते हुए कर्मचारियों का ज्ञानवर्द्धन किया। माननीय गृह मंत्री जी श्री अमित शाह द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर दिया गया संदेश प्रसारित किया गया। श्री भोमेन्द्र सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम के दौरान जलपान की व्यवस्था थी।

हिंदी पखवाडे के दौरान हिंदी में छः प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। जिनमें टिप्पण व आलेखन, अनुवाद, हिंदी निबंध, हिंदी गीत (पुरुष-महिला) एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं थीं। हिंदी गीत (पुरुष-महिला) एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं अतिथि निर्णायक-मण्डली की निगरानी में संपन्न हुआ।

कार्यालय के कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में विशेष उत्साह के साथ भाग लिया।

समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को अपराह्न 02.00 बजे श्री बिजु जोसफ, वरिष्ठ उप महालेखाकार(ले व ह) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। समापन समारोह का शुभारंभ प्रार्थना के साथ हुआ। श्री विष्णु एस पी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने स्वागत भाषण दिया। श्री बिजु जोसफ, वरिष्ठ उप महालेखाकार(ले व ह) अपने अध्यक्षीय भाषण में कर्मचारियों को अपने दैनिक कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने का आह्वान किया। श्री राहुल पा., उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) इस हिंदी पखवाडा समारोह के संयोजक रहें तथा उन्होंने कार्यालय के कर्मचारियों को हिंदी का प्रचार ऐसे आयोजनों तक सीमित ना रखकर अपने दैनिक जीवन का भाग बनाने के प्रेरणादायी उद्धरणों के साथ आशीर्वाद भाषण दिया। श्री बीजु जोसफ, वरिष्ठ उप महालेखाकार(ले व ह) एवं श्री राहुल पा. उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) ने विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किएं। इस अवसर पर हिंदी गीत प्रतियोगिता के विजेता पदाधिकारीयों ने गीत गाकर सभा का मनोरंजन किया। श्रीमती गोपिका ने हिंदी शीर्षक से संबंधित कविता का पाठ किया। श्रीमती गेळी कृष्णा, हिंदी अधिकारी (ले व ह) ने समारोह में सहयोग देने वाले सभी पदधारियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम अपराह्न 3:30 बजे संपन्न हुआ। कार्यक्रम के दौरान जलपान की व्यवस्था थी। फोटोग्राफर ने मंचासीन एवं कार्यक्रम में उपस्थित सभी पदधारियों के महत्वपूर्ण क्षणो की फोटो ली।

OFFICES OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT'S GENERAL
KERALA, BRANCH THRISSUR
हिंदी पखवाड़ा समारोह
VALEDICTORY FUNCTION

OFFICES OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT'S GENERAL
KERALA, BRANCH THRISSUR
हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION
समापन समारोह
VALEDICTORY FUNCTION

OFFICES OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANTS GENERAL,
KERALA, BRANCH THRISSUR
हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION
समापन समारोह

OFFICES OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANTS GENERAL,
KERALA, BRANCH THRISSUR
हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION
समापन समारोह
VALEDICTORY FUNCTION

उप महालेखाकारों के साथ हिन्दी कक्ष के कर्मचारी

एक रिपोर्ट

ऑडिट दिवस – 2023

भारत का सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (SAI) भारत के सबसे पुराने संस्थानों में से एक है। इसकी उत्पत्ति वर्ष 1858 में हुई । 1947 में भारत के स्वतंत्र होने के बाद, 1950 में भारत के संविधान को अपनाने के साथ भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक को एक संवैधानिक प्राधिकरण के रूप में स्थापित किया गया था। भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की भूमिका ब्रिटिश भारत में कानूनों और प्रथाओं के माध्यम से विकसित हुई और 1947 के बाद स्वतंत्र भारत में हम इस इतिहास को चिह्नित करने के लिए 16 नवंबर को 'लेखापरीक्षा दिवस' के रूप में मनाते हैं।

लेखापरीक्षा दिवस 2023 भारत के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान के इतिहास और विरासत को चिह्नित करने वाले समारोहों की श्रृंखला में तीसरा है। भारत के माननीय राष्ट्रपति ने 16 नवंबर, 2023 को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली में लेखापरीक्षा दिवस 2023 का उद्घाटन किया और इस शुभ अवसर पर हमें संबोधित किया।

तीसरे लेखापरीक्षा दिवस के बाद 31वां महालेखाकार सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन का विषय 'ड्राइविंग चेंज 2030: एम्पावरिंग एक्शन टू शेप अवर फ्यूचर' था। हमारे हितधारकों और बड़े पैमाने पर समाज तक पहुंच बढ़ाने और अच्छे सार्वजनिक प्रशासन के प्रति हमारे योगदान को प्रदर्शित करने के लिए लेखापरीक्षा दिवस के तुरंत बाद सप्ताह के दौरान देश भर के क्षेत्रीय कार्यालयों में ऑडिट सप्ताह भी मनाया गया।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के केरल में स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा 22 से 24 नवबर 2023 तक लेखापरीक्षा सप्ताह धूम-धाम से मनाया गया। कार्यक्रमों के सुचारू संचालन के लिए कार्यालयाध्यक्षों द्वारा विभिन्न समितियां गठित की गयी थी और उन समितियों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए रात-दिन कडी मेहनत की।

दि. 22/11/2023 को निबंध लेखन, रंगोली जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के साथ समारोह प्रारंभ हुआ। मुख्य कार्यालय के साथ कोट्टयम, कोच्ची, तृशूर तथा कोषिक्कोड स्थित चार शाखा कार्यालयों में प्रतियोगिताएं की गयी थीं। कार्यालय के कर्मियों के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी।

लेखापरीक्षा सप्ताह के उपलक्ष्य में आयोजित साइकिल रैली समारोह का मुख्य आकर्षण रही। राजधानी शहर तिरुवनंतपुरम में दि. 23/11/2023 को सुबह 6.30 बजे एक साइकिल रैली आयोजित हुई थी। कवडियार पैलेस के सामने से रैली शुरु हुई थी जिसका फ्लाग ऑफ केरल सरकार के अपर मुख्य सचिव श्री जयतिलक एस, आईएएस द्वारा किया गया था। श्री एस सुनील राज, आईएएएस प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, आईएएएस, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) और समूह अधिकारीगण भी मौजूद रहे। पिछली रात से देर सुबह तक हुई भारी वर्षा की परवाह किए बिना लगभग 150 अधिकारियों / पदाधिकारियों ने इस रैली में भाग लिया। रैली पांच कि.मी की दूरी तय कर तिरुवनंतपुरम के मुख्य कार्यालय में खत्म हुई। रैली के साथ एक एम्बुलेंस और फिजियोथेरापिस्ट की सेवा भी उपलब्ध करायी गयी थी।

दि. 23/11/2023 के दिन अपराह्न को मुख्य कार्यालय में एक इंटर-ऑफिस डिबेट भी चलायी गयी थी। डिबेट का संचालन श्री हरिकुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा किया गया और उसका पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन कार्य डॉ राहुल एस, उप महालेखाकार / एएमजी I तथा श्री बाषा मोहम्मद एम, उप महालेखाकार प्रशासन (लेखा एवं हकदारी) द्वारा किया गया था। महानिदेशक (केंद्रीय) कोच्ची शाखा कार्यालय के श्री नवीन ए मेनोन तथा श्री मारम रेड्डी विनय को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। महानिदेशक,लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार) शाखा कार्यालय, तिरुवनंतपुरम के श्री सायूज एन एस तथा श्री मधु ई वी को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

दि. 24/11/2023 को समापन समारोह का शुभारंभ लेखा एवं हकदारी कार्यालय के प्रधान महालेखाकार, श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, आईएएंडएएस, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वारा नवीनीकृत शिशुगृह के उत्घाटन के साथ हुआ। श्री एस सुनील राज, आईएएएस प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) भी उस शुभ घडी में उनके साथ रहे। पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार कार्यालय परिसर आयोजित होने के लिए निर्धारित 'स्थानीय स्वशासित संस्थाओं द्वारा परियोजनाओं के कार्यान्वयन में चुनौतियों' पर पैनल चर्चा सुबह 10.30 बजे आरंभ हुई । श्री एस सुनील राज, आईएएएस प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पैनल चर्चा के मॉडरेटर रहे। पैनल चर्चा के लिए आमंत्रित सदस्य – सुश्री पी पी दिव्या, जिला पंचायत, कण्णूर की अध्यक्षा, श्री एस एस विजयानंद, आईएएस (सेवानिवृत्त), सुश्री शर्मिला मेरी जोसफ,आईएएस (प्रधान सचिव, एलएसजी विभाग), प्रो.जिजु पी अलेक्स, केरला स्टेट प्लैनिंग बोर्ड के सदस्य, श्री विजु मोहन, आर्यनाड ग्राम पंचायत के अध्यक्ष आदि थे। श्रोतागण में श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, आईएएंडएएस, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), श्रीमती सबिता बालकृष्णन, निदेशक (एफ एंड सी) लेखापरीक्षा और भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग, तिरुवंनतपुरम के समूह अधिकारीगण और कर्मचारीगण शामिल थे। चर्चा के बाद श्री एस सुनील राज, आईएएएस प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) द्वारा उपरोक्त सदस्यों को लेखापरीक्षा दिवस स्मृति चिह्न हस्तांतरित किए गए।

पैनल चर्चा के बाद उपरोक्त सभी गणमान्य व्यक्तियों और भागीदार कार्यालयों के कर्मी सदस्यों की मध्याह्न भोजन की व्यवस्था की गयी थी। दोपहर के बाद 3.30 बजे सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ था। कर्मी सदस्यों के प्रार्थना गान के साथ सभा की शुरुआत हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन पेरावूर के विधायक और लोक लेखा समिति के अध्यक्ष श्री सण्णी जोसफ द्वारा किया गया। विधायक ने अपने भाषण में नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की भूमिका एवं लेखापरीक्षा रिपोर्टों के महत्व, प्रासंगिकता/प्रभाव को रेखांकित किया। बाद में प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ने भी बैठक को संबोधित किया। विधायक द्वारा सभी प्रतिभामी विजेताओं के सदस्यों को पुरस्कार वितरित किए गए।

बैठक के बाद कर्मियों और उनके परिवार के सदस्यों के विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायिका सुश्री प्रतिमा शशिधर द्वारा शास्त्रीय संगीत प्रस्तुति ने श्रोतागण को मंत्रमुग्ध कर दिया। सुश्री प्रतिमा शशिधर, महानिदेशक (केंद्रीय) कोच्ची शाखा के उप निदेशक श्री शशिधर की धर्मपत्नी है। उसके बाद वाद्ययंत्रों के ताल-मेल से श्री केशवन नंपूतिरी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने बांसुरी पर, श्री सानंद के एस, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने वयलिन पर और श्री श्रीकुमार, वरिष्ठ लेखाकार ने मृदंगम पर अपनी अदभुत् प्रतिभा का प्रदर्शन किया। श्री साईकुमार, लेखापरीक्षक की सुपुत्री कुमारी निहिता साई कुमार जो कि मिनीज रिकार्ड हॉल्डर है, ने कुच्चिप्पुडी डांस प्रस्तुत किया। श्री अनुरूप एस के, के नेतृत्त्व में महालेखाकार कार्यालय मनोरंजन क्लब टीम द्वारा प्रस्तुत समूह गान के साथ इस वर्ष का लेखापरीक्षा सप्ताह समारोह संपन्न हुआ।

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2023

यक्ता फात्तिमा
सुपुत्री श्रीमती हसीना पी पी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मुहम्मद यशल एम
सुपुत्र श्रीमती हसीना पी पी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रकाशक

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय, केरल

शाखा : तृशूर